एस0 एम0 एस0

अब नहीं लिखते वो खत
करने लगे हैं एस0 एम0 एस0
तोड़ मरोड़ कर लिखे षब्दों के साथ
करते हैं खुषी का इजहार
मिटा देता है हर नया एस0 एम0 एस0
पिछले एस0 एम0 एस0 का वजूद
एस0 एम0 एस0 के साथ ही
षब्द छोटे होते गए
भावनाएँ सिमटती गईं
खो गयी सहेज कर रखने की परम्परा
लघु होता गया सब कुछ
रिष्तों की कद्र का अहसास भीं

आकांक्षा यादव